Kritis Composed by Shri Swami Dayananda

श्रीस्वामिदयानन्दकृत-कृतयः

Document Information

Text title : Kritis for various deities by Swami Dayanandasarasvati

File name : dayAnandakRRitayaH.itx

Category : deities_misc, kRitI, misc

Location : doc_deities_misc

Author : Swami Dayanandasarasvati

Transliterated by : Swamini Tattvapriyananda tattvapriya3108 at gmail.com

Proofread by : Swamini Tattvapriyananda tattvapriya3108 at gmail.com

Latest update : November 17, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 2, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीस्वामिदयानन्दकृत-कृतयः

॥ महागणपतिं मनसा स्मरामि ॥

रागम् - तिलङ्   तालम् - आदि

पल्ल्वी   महागणपतिं मनसा स्मरामि
महादेवमुदं शिरसा नमामि   (महागणपतिम्)

अनुपल्लवी   मातङ्गाननं माहेश्वरम्
तापत्रय-युत-भवरोग-भैषजम्   (महागणपतिम्)

चरणम् -१   शतकोटि-विघ्न-परिहार-चरणम्
शान्त्यादि-सर्वकल्याण-गुणदम्
हृदन्तरं निखिल-लोकगं शिवम्
परं पदं प्रदं प्रततम्   (महागणपतिम्)

चरणम् -२   ब्रह्माण्डान्तर्गत-भूतस्थम्
यजुरादिवेद-शिखरस्थम्
नितान्तशुद्धान्तःकरणस्थम्
प्रशस्तं तटस्थं समस्तं तम्   (महागणपतिं)

॥ परिपालय मां करिवरद ॥

रागम् - मोहनम् ।   तालम् - खण्डचापु

पल्लवी   परिपालय मां करिवरद   (परिपालय)

अनुपल्लवी   अगणित-कल्याण-गुणैकरूप
अनन्ते शयान हृदये वसान   (परिपालय)

चरणम्   भवाग्नि-तापेन परितप्त-मानसम्

दोधूयमानं दुरदृष्ट-वातेन
अविद्यादि-पञ्च-क्लेशादि-तप्तम्
त्वदेक-शरण्ये शरणागतं माम्   (परिपालय)

॥ भजे विघ्नराजं विनायकम् ॥

रागम् - हंसध्वनि   तालम् - आदि

पल्लवी   भजे विघ्नराजं विनायकम्
यजे भालचन्द्रं पदवाक्यप्रमेयम्   (भजे विघ्नराजम्)

अनुपल्लवी   अथर्वशीर्षादि-प्रतिपादितं
सङ्कटनाशनं गणपतिं सदा   (भजे विघ्नराजम्)

चरणम्   वक्रतुण्डं महाकायं
एकदन्तं गजाननम्
विकटं कृष्णपिङ्गाक्षं
धूम्रवर्णं लम्बोदरम्   (भजे विघ्नराजम्)

॥ भो शम्भो शिव-शम्भो स्वयम्भो ॥

रागम् - रेवति   तालम् - आदि

पल्लवी   भो शम्भो शिव-शम्भो स्वयम्भो
गङ्गाधर शङ्कर करुणाकर
मामव भवसागर-तारक   (भो शम्भो)

अनुपल्लवी   निर्गुण-परब्रह्म-स्वरूप
गमागमभूत-प्रपञ्च-रहित
निजगुहा-निहित नितान्त-अनन्त
आनन्द अतिशय अक्षयलिङ्ग   (भो शम्भो)

चरणम्   धिमित धिमित धिमि तरिकिट तकतोम्
तों तों तरिकिट तरिकिट तकतोम् ।
मतङ्ग-मुनिवर-वन्दित ईश
सर्वदिगम्बर-वेष्टितवेष

नित्य-निरञ्जन नृत्यनटेश
ईश सभेश सर्वेश (भो शम्भो)

॥ सोमेश्वरं भजेम ॥

रागम् - तालम् - आदि

पल्लवी सोमेश्वरं भजेम सपरिवार सोमेश्वरम्

अनुपल्लवी वामे भागेश्वर्या युतं सततं
साम-गानेन तोषितं
सोमादि-यज्ञ-हविर्भुजं
परम-पद-प्रदं तम् (सोमेश्वरम्)

चरणम् अयि-उणादि-सूत्र-जनि-कर्तृ-रूपं
षड्जादि-सप्त-स्वर-नाद-भूतं
शम-दमादि-युक्तेन प्रतिपद्यमानं
पूतं पवित्रं प्रणव-स्वरूपम् (सोमेश्वरम्)

नित्य-निरीहं निगमान्तगं तं
राज-कूट-क्षेत्र-भक्त-पालकं कालान्तकं (सोमेश्वरम्)

॥ वन्देऽहं शारदाम् ॥

रागम् - यमन्कल्याणी तालम् - मिश्रचापु

पल्लवी वन्देऽहं शारदाम्
विशारदां ज्ञानदां वरदाम् (वन्देऽहम्)

अनुपल्लवी शुद्ध-सत्त्व-स्वरूपिणीम्
स्वच्छ-हृदय-निवासिनीम्
स्वप्रकाश-रूपिणीम् (वन्देऽहम्)

चरणम् परापर-विद्या-भूषिताम्
सुरवर-सुजन-सेविताम्
शुभदां सुलभां

सुस्वर-वाद्य-निरताम्   (वन्देऽहम्)

॥ मीनाक्षी ॥

रागम् - भागेश्री   तालम् - रूपकम्

पल्लवी   मधुर-मधुर-मीनाक्षि
मधुरापुरि-निलये अम्ब
अम्ब जगदम्ब   (मधुर-मधुर)

अनुपल्लवी   मधुर-मधुर-वाग्विलासिनि
मातङ्गीं मरकताङ्गीं
मातर्मम हृदय-निवासिनि
मां पाहि सन्ताप-हारिणि   (मधुर-मधुर)

चरणम्   सुन्दरेश्वर-भागेश्वरि
सुवरादि-जगदीश्वरि छाये
पतितात्म-परितारिणि माये
परमगुह्य-परब्रह्म-सहाये   (मधुर-मधुर)

॥ षण्मुखः ॥

रागम् - सिन्धुभैरवी   तालम् - मिश्रचापु

पल्लवी   षण्मुखं भज षण्मुखम्
सर्वगं शिखि-वाहनम्
उन्मोचन-प्रमोचनाय   (षण्मुखं भज)

अनुपल्लवी   शरवणभव-विभवम्
श्रितजन-सेवितचरणम्
कामादि-षड्रिपु-निधनम्
सामादि-वेदगम्यम्   (षण्मुखं भज)

चरणम्   सर्वजन-मनोरञ्जकम्
प्राज्ञं प्रणवार्थ-देशिकम्

गुहं गुरुवरं शूरं शूलधरम्
परतरं भवतारकम्   (षण्मुखं भज)

॥ कल्याणसुब्रह्मण्यः ॥

रागम् - कल्याणी   तालम् - आदि

पल्लवी   कल्याणसुब्रह्मण्य नमोऽस्तुते
हे कल्याणसुब्रह्मण्य नमोऽस्तुते   (हे कल्याणसुब्रह्मण्य)

अनुपल्लवी   वल्ल्या समेत-देवसेनापते सुरपते
(हे कल्याणसुब्रह्मण्य)

चरणम्   पशुपाश-मोह-विनाशैक-हेतो
आबाल-पण्डित-सुवन्दित-विभो
पशुपुत्र-कलत्र-स्वर्गादीष्ट-कामतरो
परब्रह्मपदप्रद-प्रभो   (हे कल्याणसुब्रह्मण्य)

मध्यम-कालः   विश्वाकार-ओङ्कार-तत्त्वार्थमूर्ते गुरुकुलाचलकीर्ते
भक्तजन-हृदयपूर्ते स्फूर्ते सुकीर्त्ते
(हे कल्याणसुब्रह्मण्य)

॥ रामं भजे श्यामं मनसा ॥

रागम् - दुर्गा   तालम् - आदि

पल्लवी   रामं भजे श्यामं मनसा
रामं भजे श्यामं वचसा   (रामं भजे)

अनुपल्लवी   सर्व-वेद-सार-भूतम्
सर्व-भूत-हेतु-नाथम्   (रामं भजे)

चरणम् -१   विभीषणाञ्जनेय-पूजित-चरणम्
वसिष्ठादि-मुनिगण-वेदित-हृदयम्
वशीकृत-माया-कारित-वेषम्
एतं पुरेशं सर्वेशम्   (रामं भजे)

चरणम् -२ नील-मेघ-श्यामलं नित्य-धर्म-चारिणम्
दण्डिनं कोदण्डिनं दुराचार-खण्डनम्
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-दुःख-दोष-भव-हरम्
(रामं भजे)

॥ श्यामसुन्दरं भावये ॥

रागम् - नाट्टै तालम् - मिश्रचापु

पल्लवी श्यामसुन्दरं भावये निगमान्तगम् (श्यामसुन्दरम्)

अनुपल्लवी कमनीय-कामकोटि-कल्पद्रुमम् (श्यामसुन्दरम्)

चरणम् भावाभावानिर्वचनीयमाया-
कल्पित-कालदेशावच्छिन्न-शरीरं सततम्
अनन्तकल्याणगुणसम्पन्नम्
अनन्यभक्त्या परिसम्प्राप्तम्
सच्चिद्घनरससमूर्तिम्
पुण्यमनोरथपूर्तिं हृत्स्फूर्तिं तम् (श्यामसुन्दरम्)

॥ हे गोविन्द हे गोपाल ॥

रागम् - हिन्दोलम् तालम् - रूपकम्

पल्लवी हे गोविन्द हे गोपाल
उद्धर मां दीनम्
अतिदीनं बलहीनम् (हे गोविन्द)

अनुपल्लवी विहित-विहीनं विपर्यय-ज्ञानं
सञ्चित-सर्व-कलुष-कलापम् (हे गोविन्द)

चरणम् वेदं न जाने वेद्यं न जाने
ध्यानं न जाने ध्येयं न जाने
मन्त्रं न जाने तन्त्रं न जाने
पद्यं न जाने गद्यं न जाने (हे गोविन्द)

॥ दक्षिणामूर्ते अमूर्ते ॥

रागम् - रञ्जनी तालम् - आदि

पल्लवी दक्षिणामूर्ते अमूर्ते
सनकादि-मुनिजन-हृन्मूर्ते (दक्षिणामूर्ते)

अनुपल्लवी आगमसार-परिपूर्ण-आत्म-
जिज्ञासु-मनोगत-मूर्ते (दक्षिणामूर्ते)

चरणम् प्रसीद हृदीश अधीहि ब्रह्म
त्यक्तसर्वं युक्तात्मानं
त्वच्छरणागतं माम् (दक्षिणामूर्ते)

॥ त्यजरे भव-भय-तापम् ॥

रागम् - बेहाग् तालम् - आदि

पल्लवी त्यजरे भव-भय-तापम्
भजरे व्रज-जन-मनस्सुभाजम्
गुरु-राजं विराजम् (त्यजरे)

अनुपल्लवी अपि चेदसि पापकृत्तमः
सर्वं वृजिनं सन्तरिष्यसि त्वम् (त्यजरे)

चरणम् इदं शरीरं क्षेत्रं हि विद्धि
क्षेत्रं यो वेत्ति सर्वेषु क्षेत्रेषु
स हि परमात्मा अहमिति पश्य
समाहितो भूत्वा (त्यजरे)

॥ भावये परमात्मान् ॥

रागम् - आरभी तालम् - आदि

पल्लवी भावये परमात्मानं
भवभयदूरं नितराम् (भावये)

अनुपल्लवी श्रवण-मनन-मुख-प्राप्त-सतत्त्वम्
आदि-मध्यान्त-रहितं परिपूर्णम् (भावये)

चरणम् -१ कल्पित-सकल-भुवनाधारम्
सद्गुरु-सुमुख-कमलोद्भूतं
जप-तपः-कर्म-सुशितया बुद्ध्या
बोधं प्रतिबोधं विदितं महान्तम् (भावये)

चरणम् -२ असङ्गं अस्वप्नं अचिन्त्य-रूपम्
मध्यम-कालः शान्तं शिवं निर्विकल्पं परेशम्
समं सदा सर्व-भूतेषु गूढम्
सुखं स्वतन्त्रं सुबोध-स्वरूपम् (भावये)

॥ शङ्कराचार्यं भजेम ॥

रागम् - मोहनम् तालम् - रूपकम्

पल्लवी शङ्कराचार्यं भजेम
आदि-शङ्कराचार्यं भजेम
शिवशङ्कर-रूपं अरूपम्
अद्वयानन्द-करं यतिवरं गुरुवरम् (शङ्कराचार्यम्)

अनुपल्लवी तोटकादि-हृद्भावित-चरणम्
विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधिम्
अघटित-माया-भव-अपहारम्
हारं श्रुतिसारं वारं वारम् (शङ्कराचार्यं)

चरणम् कुशाग्र-बुद्धि-विशेष-विज्ञातम्
ईश-केनादि-भाष्य-विख्यातं
विज्ञात-परात्म-निजस्वरूपम्
ज्ञेयं ध्येयं गेयं वयम् (शङ्कराचार्यम्)

॥ भारत देश हिताय ॥

रागम् - देश तालम् - चतुश्र एकम्

पल्लवि भारत-देश-हिताय
भरतादि-महामति-सेवित (भारत...)

अनुपल्लवि आसेतु-हिमाचल-वनगिरिजन-संरक्षणाय
कुरु सेवां त्वं कुरु सेवां त्वं कुरु सेवां त्वं कुरु सेवाम्
(भारत...)

चरणम् आयुरारोग्य-विवर्धनाय धर्म-संस्थापनाय
क्षोभनिवारणाय सुभिक्ष-परिप्रापणाय
दीनजन उद्धारणाय
कुरु सेवां त्वं कुरु सेवां त्वं कुरु सेवां त्वं कुरु सेवाम्
(भारत...)

Encoded and proofread by Swamini Tattvapriyananda tattvapriya3108 at gmail.com

Kritis Composed by Shri Swami Dayananda
pdf was typeset on December 2, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*